मातृ भाषा एक बड़ी शक्ति है: प्रो. गिरीश्वर मिश्र

वि. वि. वर्धा। मातृ भाषा एक बड़ी शक्ति है। हम मातृ भाषा में ही सोचते हैं व लिखते हैं। यह कहना है महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र का। प्रो. मिश्र अंतरराष्ट्रीय मातृ भाषा दिवस पर विश्वविद्यालय द्वारा हबीब तनवीर सभागार में 'मातृ भाषा और सृजनात्मकता' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में अध्यक्षीय भाषण कर रहे थे। प्रो. मिश्र ने कहा कि हमारे देश में भाषा के बोलने

मातृभाषा दिवस कार्यक्रम में बाएं से चित्रा मुद्गल, रमेश दवे, प्रो. गिरीश्वर मिश्र तथा श्रीमती माधुरी मिश्र

कार्यक्रम में उपस्थित श्रोता

और कार्य करने के विभिन्न स्तरों को लेकर समस्या भी है। परंतु भारत की एक और मजेदार बात यह है कि लगभग हर व्यक्ति बहुभाषी है। यह विविधता देश, क्षेत्र और हमारे स्वभाव के साथ समाहित है। हम

विभिन्न भाषाओं का स्वाद लेने, उसका अनुभव करने जैसे शौक को पाले रहते हैं, यह एक अच्छी बात भी है।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जनसंचार विभाग के अध्यक्ष डॉ. कृपाशंकर चौबे ने कहा कि हिंदी विश्वविद्यालय में अंतरराष्ट्रीय मातृ भाषा दिवस मनाए जाने का एक अलग आशय है क्योंकि इस विश्वविद्यालय की अवधारणा हिंदी भाषा के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाओं की आपसी साझेदारी और समझदारी विकसित करने पर टिकी है। डॉ. चौबे ने याद दिलाया कि पाकिस्तान के बनने के बाद जब वहाँ के प्रधानमंत्री लियाक़त अली खान ने 1948 में उर्दू को राष्ट्रीय भाषा घोषित किया तो पूर्वी पाकिस्तान में उसकी जबरदस्त प्रतिक्रिया हुई थी। ढाका विश्वविद्यालय के विद्यार्थी मातृ भाषा को लेकर सड़क पर उतर आए थे। वह आंदोलन धीरे-धीरे स्वायत्तता के रूप में बदला और फिर वही आंदोलन स्वाधीनता के संग्राम में बदल गया और एक देश के रूप में बांग्लादेश का उदय हुआ। 1952 में जब ढाका में कानून सभा की बैठक हो रही थी, उस समय भाषा आंदोलनकारी बांग्ला भाषा को राष्ट्रभाषा बनाने की मांग कर रहे थे तो उन पर गोलियां चलाई गईं। उनकी याद में ही हर साल 21 फरवरी को भाषा शहीद दिवस मनाया जाता है। उस दिवस को अब यूनेस्को व संयुक्त राष्ट्रसंघ ने अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में मान्यता दी है।

कार्यक्रम में उपस्थित विभिन्न भारतीय भाषाओं के अध्येताओं ने अपनी-अपनी मातृभाषाओं में कविताओं की आवृत्ति की। मुस्लिम अख्तरा और सद्दाम हुसैन ने बांग्ला, डॉ. पुरंदर दास ने राजस्थानी, डॉ. संदीप सपकाले व धर्मेश मंगेशकर ने मराठी में, डॉ. हरप्रीत कौर और प्रियंका शर्मा ने पंजाबी, डॉ. लेखराम दन्नाना ने संस्कृत और तेलुगू, डॉ. अप्रमेय मिश्र, रूपेश कुमार ने हिंदी, नित्यप्रिय प्रलय, चंचल, कंचन और मुकुंद ने मैथिली, डॉ. जय कौशल ने काकबरक, आदिल रशीद ने उर्दू और स्वाति अवस्थी ने अवधी में काव्य पाठ किया। कार्यक्रम के अंत में हिंदी के प्रति देश और समाज की उदासीनता को लेकर सुरभि विप्लव ने एकल नाटक की प्रस्तुति की।

'मातृ भाषा और सृजनात्मकता' पर परिचर्चा में शामिल विद्यार्थियों ने भाषा से जुड़े कई प्रश्न पूछे जिनका जवाब परिचर्चा के पैनल में शामिल कथाकार चित्रा मुद्गल, मनोविज्ञानी प्रो. अजित दलाल, साहित्यकार रमेश दवे, शिक्षाविद् प्रो. अरबिन्द कुमार झा ने दिया। परिचर्चा में शोध छात्र अनिल कुमार गुप्ता के सवाल 'जब बहुभाषी व्यक्ति क्रोध में होता है तो वह अपने मातृ भाषा में ही अपने क्रोध को क्यों व्यक्त करता है, के जवाब में कुलपति तथा देश के जाने-माने मनोविज्ञानी प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि व्यक्ति के मस्तिष्क में दो प्रकार की क्षमता होती है। पहली संज्ञानात्मक और दूसरी भावनात्मक। क्रोध के समय जिसकी प्रबलता अधिक होती है, उसी भाषा में व्यक्ति अपने आक्रोश को व्यक्त करता है। इस जवाब पर प्रो. दलाल ने भी अपनी सहमति जतायी। युवा शिक्षाशास्त्री ऋषभ कुमार मिश्र के प्रश्न, क्रिएटिव और एकेडमिक राइटिंग में किन-किन बातों को ध्यान में रखा जाना चाहिए, के जवाब में कुलपति ने कहा कि

क्रिएटिव राइटिंग सृजन से जुड़ी है और इसकी भाषा अन्तःप्रेरणा से जन्म लेती है जबकि एकेडमिक राइटिंग विज्ञान आधारित होती है। कार्यक्रम के संयोजक शिक्षा विद्यापीठ के सहायक प्रोफेसर ऋषभ कुमार मिश्र ने समारोह का संचालन किया। कार्यक्रम में जनसंचार विभाग के विद्यार्थियों के प्रायोगिक अखबार 'नव सम्प्रेषण' के अंतःसंकाय खेल प्रतियोगिता विशेषांक का लोकार्पण कुलपति ने किया। इसका संपादन कुमार प्रियतम, पंकज कुमार और अन्य छात्रों ने किया है। धन्यवाद ज्ञापन विकास एवं शांति अध्ययन विभाग के सहा. प्रोफेसर तथा हिंदी के जाने-माने कथाकार डॉ. राकेश कुमार मिश्र ने किया।